12

बस की यात्रा

रचनाकार/कवि का परिचयः नामः हरिशंकर परसाई, **जन्मः** 22 अगस्त 1922 ई., मृत्युः 10 अगस्त 1998 ई.

प्रमुख रचनाएँ– कहानी संग्रहः हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, संस्मरणरू तिरछी रेखाएँ। **व्यंग्यः** भूत के पाँव पीछे, सदाचार का ताबीज, ठिठुरता हुआ गणतंत्र, शिकायत मुझे भी है, विकलांग श्रद्धा का दौर।

अधिगम प्रतिफल :

- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं।
- विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं।
- व्यंग्य रचना को पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं।

पाठ का परिचय – प्रस्तुत पाठ में लेखक ने एक जर्जर बस में की गई यात्रा के बहाने अपने समय में यातायात की दुर्व्यवस्था पर गहरा व्यंग्य किया है। अपनी बेहद सधी और चुटीली भाषा के कारण व्यंग्यकार का यात्रा–अनुभव कभी गुदगुदाता है तो कभी रोमांचित करता है।

© JCERT not to be republished

सार–संक्षेप

एक बार लेखक अपने चार मित्रों के साथ बस से जबलपुर जाने वाली ट्रेन पकड़ने के लिए अपनी यात्रा बस से शुरु करने का फैसला लेते हैं। परन्तु कुछ लोग उसे इस बस से सफर न करने की सलाह देते हैं। उनकी सलाह न मानते हुए, वे उसी बस से जाते हैं। बस की हालत देखकर लेखक मजाक में कहते हैं कि बस पूजा के योग्य है। नाजुक हालत देखकर लेखक की आँखों में बस के प्रति श्रद्धा के भाव आ जाते हैं। इंजन के स्टार्ट होते ही ऐसा लगता है की पूरी बस ही इंजन हो। सीट पर बैठ कर उन्हें लगता है कि वे सीट पर बैठे हैं या सीट उन पर। बस को देखकर वे कहते हैं ये बस जरूर गाँधी जी के असहयोग आंदोलन के समय की है क्योंकि बस के सारे पुर्जे एक–दूसरे को असहयोग कर रहे थे।

कुछ समय की यात्रा के बाद बस रुक गई और पता चला कि पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया है। ऐसी दशा देखकर वे सोचने लगे न जाने कब ब्रेक फेल हो जाए या स्टेयरिंग टूट जाए। आगे पेड़ और झील को देख कर सोचते हैं न जाने कब टकरा जाए या गोता लगा ले। अचानक बस फिर रुक जाती है। आत्मग्लानि से मनभर उठता है और विचार आता है कि क्यों इस वृद्धा पर सवार हो गए।

इंजन ठीक हो जाने पर बस फिर चल पड़ती हैं किंतु इस बार और धीरे चलती हैं। आगे पुलिया पर पहुचते ही टायर पंचर हो जाता है। अब तो सब यात्री समय पर पहुचने की उम्मीद छोड़ देते हैं तथा चिंता मुक्त होने के लिए हँसी मजाक करने लगते हैं। अंत में लेखक का डर का त्याग कर आननद उठाने का प्रयास करते हैं तथा स्वयं को उस बस का एक हिस्सा स्वीकार कर सारे भय मन से निकाल देते हैं।

गद्यांश की व्याख्या–1

हम पाँच मित्रों ने तय किया की शाम चार बजे की बस से चलें.....हम बैठे हैं या सीट हम पर बैठी है। (पृष्ठ संख्या – (87 – 88)

शब्दार्थ –

हाजिर	: उपस्थित	विदा	: आखिरी सलाम
सफर	: यात्रा	रंक	: गरीब
डाकिन	: डराने वाली	कूच करने	: जाना
श्रद्धा	: किसी के प्रति आदर सम्मान और प्यार का भाव	निमित्त	: कारण
उमड़	: जमा होना	फौरन	: तुरंत
वयोवृद्ध	: बूढ़ी या पुरानी	सरक	: खिसक
निशान	: चिन्ह		

सविनय अवज्ञा आन्दोलनो : गांधी जी द्वारा चलाया गया 1921 का आंदोलन

© JCERT not to be republished

वृद्धावस्था	: बुढ़ापा	कष्ट	: परेशानी
ट्रैनिंग	: सीख	सवार	: चढा
दौर	: जमाने	हिस्सेदार	: साझेदार
गुजर	: चल	गजब	: आश्चर्य
असहयोग	: साथ न देना	विश्वसनीय	: भरोसे वाली
भेदभाव	: अंतर		

व्याख्या

लेखक ने वर्णन किया कि वे पाँच मित्र थे। उन्होंने एक कार्यक्रम बनाया कि शाम चार बजे की बस से चलेंगे। ये जो चार बजे की बस है यही उन्हें उनकी मंजिल तक पहुँचने में मदद करेगी। पन्ना (पन्ना जगह का नाम) से ये बस चलने वाली थी। करीबन एक घंटे बाद पन्ना से सतना के लिए उन्हें बस मिलनी थी। लेखक और उनके मित्रों को जबलपुर जाना है इसलिए कुछ यात्रा वो बस से करेंगे उसके बाद जबलपुर के लिए ट्रेन पकडेंगे। यात्रा में पूरी रात का समय लगेगा और वह सुबह के समय तक घर पहुँच जाएँगे। लेखक के साथ जो दो मित्र गए थे उन्हें दफ्तर में समय पर उपस्थित होना था। इसलिए वापसी का यही रास्ता अपनाना जरूरी था। उनके जो जानकर लोग थे उन्होंने उन्हें सलाह दी कि अगर कोई समझदार व्यक्ति होगा तो इस शाम को चलने वाली बस से यात्रा करना पसंद नहीं करेगा, क्योंकि शाम के थोड़ी देर बाद काफी अँधेरा हो जाता है और रात के समय में यात्रा करना सुरक्षित नहीं रहता। "क्या रास्ते में डाकू मिलते हैं?" एक प्रश्न किया है लेखक ने। रास्ते में डाकू–वगैरह तो नहीं मिलते लेकिन जो बस की हालत है वो बहुत ही डरावनी है। बस खराब हालत में है, पता नहीं मंजिल पर पहुँचा पाएँगी की नहीं, तो लोग हमेशा उस बस से जाने से डरते है। जिस बस से लेखक को जाना था वह बस बहुत पुरानी थी वह बहुत सालों से चल रही थी लोग उसके द्वारा अपनी अनेक यात्राएँ पूरी कर चुके थे। इस बस को देखने से यह अनुभव हो रहा था कि इस बस ने बहुत सारी यात्राएँ की हैं, बहुत सारे लोगों को उनकी मंजिल पर पहुँचाया है। उसके निशान इस बस पर साफ दिखाई दे रहे थे। उसके शीशे, खिड़कियाँ, और पूरी बॉडी टूट चुकी थी। कोई भी चीज सही ठिकाने पर नहीं थी, घसता हालत हो चुकी थी उसका इंजन आवाज कर रहा था। तो इसलिए लोग यात्रा नहीं करना चाहते थे क्योंकि बस बहुत पुरानी हो चुकी थी।

उस बस को कुछ परेशानी हो सकती है क्योंकि वह बहुत पुरानी हो चुकी है वृद्ध हो चुकी है। यह बस पूजा के योग्य थी। क्योंकि इसमें बहुत सारे लोगों को अपनी मंजिल पर पहुँचाया था, बहुत ज्यादा सफर तय किया था इसलिए यह बस पूजा के योग्य थी। एक बूढ़ी और पुरानी बस के ऊपर सवार होने

© JCERT not to be republished

को कैसे सोचा जा सकता है जबकि यह तो उसके आराम करने का समय है। जिस बस से लेखक अपनी यात्रा कर रहे थे, और ये जिस कंपनी की बस थी उसके जो हिस्सेदार थे, वो भी इसमें यात्रा कर रहे थे। लेखक ने उससे प्रश्न किया कि क्या यह बस चलती भी है? उन्होंने उत्तर दिया कि चलती क्यों नहीं है जी! अभी चलेगी। वह उसके मालिक थे और उन्हें उस पर पूरा भरोसा था। लेखक औ उनके मित्रों ने कहा– वही तो हम देखना चाहते हैं कि यह कैसे चलेगी। अपने आप चलती है क्या यह?" हिस्सेदार ने लेखक की बात पर आश्चर्य जताया और लेखक ने उनकी बात पर आश्चर्य जताया क्योंकि उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि इतनी पुरानी बस भी चलती है। इसीलिए वह पुनः कहते हैं ऐसी बस अपने आप चलती है ये तो कमाल हो गया। लेखक और उनके मित्रों के मन में विचार था कि जाएँ या न जाएँ। उनमें से एक डॉक्टर मित्र भी था। उन्होंने भरोसा और बढ़ाया, विश्वास जताया कि डरने की कोई बात नहीं हैं, चलते हैं। बस ने बहुत सारे लोगों को अपनी मंजिल पर पहुँचाया है। उसने कभी किसी को धोखा नहीं दिया। नयी–नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है। जो नयी–नवेली बसें है उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता लेकिन इस बस पर विश्वास किया जा सकता है। यह आपको अपनी मंजिल पर अवश्य पहुँचाएगी। जैसे माँ अपने बेटे को गोद में उठाकर चलती है, ये बस भी वैसे ही हम सब को अपने बच्चों की तरह लेकर चलेगी इस सफर पर, और मंजिल पर पहुँचाएगी। जो मित्र उन्हें छोड़ने आए थे वे इस तरह देख रहे थे जैसे अंतिम विदा दे रहे हो अंतिम विदा कर रहे हों। उन्हें भी शक हो रहा था इसीलिए वह ऐसी नजरों से देख रहे थे कि जैसे कि पता नहीं फिर मिलेंगे की नहीं। उनकी आँखें कह रही थी कि इस जिन्दगी में लोगों का आना–जाना तो लगा ही रहता है लोग पैदा होते हैं और मृत्यु को प्राप्त करते है। आदमी के इस दुनिया से जाने का कोई न कोई एक निमित कारण बनता है। ड्रॉइवर ने इंजन को स्टार्ट किया और बस शुरू हो गई। जब वे बस में जाकर बैठे तो ऐसा महसूस हुआ कि जैसे वे इंजन पर ही बैठे हो क्योंकि पूरी बस में इंजन की ही आवाज गूँज रही थी। बस की खिड़कियाँ थी उस पर बहुत ही कम काँच लगे थे और हवा भी पूरे जोरों से आ रही थी और जो काँच बचे थे वह टूटे–फूटे थे, बुरी हलात में थे, यात्रियों को चोट लग सकती थी। वे तुरंत खिड़की से दूर खिसक गए क्योंकि लेखक डर रहे थे कहीं उन्हें कोई चोट न पहुँचाए इसलिए वह खिड़की के पास नहीं बैठे। इंजन चल रहा था। बस स्टार्ट थी। ऐसा महसूस हो रहा था कि जहाँ वे बैठे हैं उस सीट के नीचे ही इंजन लगा है और घर्र–घर्र की आवाज कर रहा है। जो कि बहुत ही खतरनाक महसूस हो रहा था। बस इतनी पुरानी थी की लेखक और उनके मित्रों को लगा कि वह भारत की आजादी के समय हुए असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय की होगी।

जिस तरह से गाँधी जी के समय में असहयोग आंदोलन चलाया गया था इस तरह ही इस बस का हर हिस्सा पूरी तरह से सहयोग नहीं कर रहा था अर्थात् एक दूसरे का साथ नहीं दे रहा था। बस बहुत पुरानी है, बहुत पुराने जमाने से यह चलती आ रही है इस कारण इसकी हालत इतनी खराब हो गई है कि अब लेखक इससे यात्रा करने से डर रहे हैं क्योंकि इसके इंजन आवाज कर रहे हैं खिड़की टूटी हुई हैं और एक एक पुरजा हिल रहा है। बस की सीट थी और जो उसकी बॉडी आपस में साथ नहीं दे रहे थे, असहयोग कर रहे थे, यानी सारी बस हिल रही थी। कभी लगता कि सीट अपनी जगह पर नहीं थी वह भी हिल रही थी तो ऐसा महसूस हो रहा था, कि सीट बॉडी को छोड़कर खिसक गई है

© JCERT not to be republished

आगे निकल गई है। कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागी जा रही है। कभी ऐसा भी लगता आठ–दस मील चलने पर सारे अंतर मिट गए। लेखक को समझ नहीं आ रहा था कि हम बस की सीट पर बैठे हैं या सीट हमारे ऊपर सवार हो गई है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. बस पर चढ़ाने वाले लोग लेखक और उसके मित्रों को कैसी विदाई दे रहे थे?

2. 'आया है सो जाएगा – राजा, रंक, फकीर'– इस पंक्ति से क्या आशय है?

गद्यांश की व्याख्या–2

''एकाएक बस रुक गई।.......... हँसी–मजाक चालू हो गया।'' (पृष्ठ सं. 89–90)

शब्दार्थ –

उम्मीद	:	आस	प्राणांत	:	मरना
रफ्तार	:	गति	बियाबान	:	सुनसान
एक पुलिया	:	छोटा सा पुल	भरोसा	:	विश्वास
फिस्स	:	एक प्रकार की ध्वनि	लुभावने	:	सुन्दर
थम	:	रूक	गोता	:	डुबकी
इत्तफाक	:	संयोग	क्षीण	:	कमजोर
उत्सर्ग	:	बलिदान	वृक्षों	:	पेड़
दुर्लभ	:	जो कम मिलता हो	दयनीय	:	बेचारी
पसारे	:	फैलाए	वृद्धा	:	बूढी
प्राण	:	जान	ग्लानि	:	खेद
वक्त	:	समय	अंत्येष्टि	:	अंतिम क्रिया

© JCERT not to be republished

उम्मीद : आशा

ज्योति : रोशनी

लोक : मृत्यु लोक

श्रद्धाभाव : सम्मान के साथ

टटोलकर : ढूंढकर

प्रयाण : प्रस्थान

रेंग : धीरे–धीरे

बेताबी : बेचौनी

तनाव : चिंता

जान हथेली पर लेकर : बहुत खतरा लेना

व्याख्या–

अचानक बस में कुछ खराबी आ गई और वह रूक गई। बस की पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया था और पेट्रोल बहने लगा था। ड्राइवर ने बाल्टी में पेट्रोल निकालकर उसे बगल में रखा और नली अर्थात् एक पाईप के द्वारा इंजन में भेजने लगा। लेखक आस लगाऐ बैठे थे कि थोड़ी देर बाद बस–कंपनी के जो हिस्सेदार थे इंजन को निकाल कर गोद में रख लेगें। ऐसा लेखक को लगने लगा था क्योंकि जो कंपनी की बस थी उसके जो हिस्सेदार थे वह भी इसी बस से यात्रा कर रहे थे और अब तो यही सोचा जा सकता था कि अब धीरे–धीरे इस बस के इंजन को भी निकालकर जो हिस्सेदार है वह अपनी गोदी में रख लेगें। और उसे नली से पेट्रोल पिलाऐंगे। जैसे माँ बच्चे के मुँह दूध की शीशी लगाती है।

बस की गति अब पंद्रह–बीस मिल हो गई थी अर्थात् रफ्तार बहुत धीमी हो गई थी। लेखक को उस पर बिलकुल भरोसा नहीं था क्योंकि उसकी हालत ही ऐसी थी और अब तो उसके पेट्रोल के टंकी में छेद हो गया था, अब उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। कभी भी कुछ भी हो सकता था। ब्रेक फेल हो सकता है, स्टीयरिंग टूट सकता है। कुछ भी हो सकता था। मन में ख्याल आ रहे थे जैसा उनके मन में भय था और जैसा उन्हें संदेह था कि यह बस शायद ही हमारे इस यात्रा को सफल करे और जैसा उन्होंने सोचा था और जैसा उनके मन में डर था, वैसा–वैसा ही घट रहा था। जो दृश्य सामने आ रहा था जंगलों का, आस–पास घने पेड़ों का, नदी तालबों का, बहुत ही सुन्दर दिख रहा था। जब उसकी खिड़की से वे देख रहे थे तो ये दृश्य बहुत ही अच्छे लग रहे थे। दोनों तरह हरे–भरे पेड़ थे, जिन पर पक्षी बैठे थे और चहचहा रहे थे। जैसा कि बस कि हालत खसता थी लेखक डरा हुआ था वह जब भी कोई पेड़ आता सड़क के किनारे, तो वह उसे दुश्मन जैसा नजर आता क्योंकि ऐसा लगता कि शायद बस पेड़ से टकरा सकती है। जो भी पेड़ आता, डर लगता कि इससे बस टकरा जाऐगी। वह निकल जाता तो जान में जान आ आती और दूसरे पेड़ का इंतजार करने लगता। झील दिखती तो सोचता कि इसमें बस गोता लगा जाएगी। गोता लगा जाएगी अर्थात् डुबकी लगा जाएगी। एक बार फिर से बस रूकी। फिर कुछ न कुछ खराबी हुई। ड्राइवर ने बहुत ही

© JCERT not to be republished

कोशिश की पर वह चली नहीं। बस ने अपना विरोध जताना शुरू कर दिया था। कंपनी के हिस्सेदार कह रहे थे– "बस तो फर्स्ट क्लास है जी! यह तो एक इत्तफाक की बात है।" इत्तफाक का अर्थ है संयोग की बात है। ऐसा वैसा कभी इसके साथ कभी हुआ नहीं है यह तो आज ही पहली बार ऐसा संयोग हुआ है ऐसा समय हो गया है कि यह बस के साथ कुछ खराबी आ रही है। वरना परेशान होने की जरूरत नहीं है। कंपनी के हिस्सेदार ने भरोसा दिलाते हुए कहा बस बहुत ही फर्स्ट क्लास है अर्थात् बहुत अच्छी हालत में है। यह डरने की बात नहीं है ऐसा कभी–कभी हो जाता है। जैसा कि रात हो गई थी चाँदनी रात थी तो क्षीण चाँदनी में पेड़ों की छाया के नीचे वह बस खड़ी बेचारी लग रही थी। बस जैसा कि रूक चुकी थी, अँधेरा हो चुका था और चाँद की चाँदनी में पेड़ों की छाया के नीचे वह बस खड़ी थी और बहुत ही बेचारी सी लग रही थी क्योंकि उसकी हालत बहुत दयनीय थी। लगता, है जैसे कोई बुढ़ी औरत थक कर बैठ गई हो। बस इस तरह से रूक कर खड़ी हो गई थी। जैसे कोई बूढ़ी औरत थक कर बैठ जाती है। उन्हें अपने आप पर खेद हो रहा था कि बेचारी पर लदकर हम चले आ रहे हैं। अगर इसका प्राणांत हो गया या यह पूरी तरह से बेकार हो गई तो इस सुनसान जंगल में हमें इसकी से अंतिम क्रिया करनी पड़ेगी। हमें इसका यहीं पर त्याग करना होगा और अपना सफर कैसे पूरा करेंगे इस सब की परेशानी लेखक के मन में चल रही थी। कंपनी के हिस्सेदार जो इस बस से यात्रा कर रहे थे अब वह अपनी मदद करने लगे थे। उन्होंने इंजन को खोला और कुछ सुधारा। बस आगे चली। इसके पश्चात् बस आगे बढ़ी उसकी चाल और भी कम हो गई थी। ऐसे लग रहा था जैसे कि पैदल यात्रा कर रहे हैं। बस की हैड–लाईट की रौशनी अब कम होने लगी। वृद्धा बस को कह रहे हैं और आँखें हैड–लाईट को। चाँदनी रात में रास्ता ढूंढकर वह धीरे–धीरे चल रही थी। अँधेरी रात में उसकी हैड–लाईट कमजोर हो गई थी, रौशनी कम थी इसलिए चाँदनी का सहारा लेकर ड्राइवर उसे धीरे–धीरे चला रहा था। आगे या पीछे से कोई गाड़ी आती दिखती तो वह एकदम किनारे पर खड़ी हो जाती और बस का ड्राइवर साथ से गुजरने वाली गाड़ीयों को कह रहा था कि बगल से निकल जाओ। वह जो गड़ियाँ गुजर रही थी वह नई नवेली थी, जवान थी इसलिए वह उसे बेटी कहता है। लेखक बस की तरफ से कहते हैं कि उसकी तो उम्र हो गई है, तुम जवान हो तुम निकल जाओ। मैं तो धीरे–धीरे ही आऊँगी। बस एक छोटे से पुल के ऊपर पहुँची ही थी कि एक टायर फिस्स करके बैठ गया। टायर से एक प्रकार की ध्वनि निकली तो सब समझ गए की टायर पन्चर हो गया है और सफर वहीं पर रूक गया। बस की गति बहुत कम थी इसलिए शायद किसी को परेशानी नहीं हुई, कोई घायल नहीं हुआ। अगर स्पीड ज्यादा होती बगल में ही एक बहुत गहरा नाला बह रहा था, बस उसमें गिर सकती थी। लेखक ने कंपनी के हिस्सेदार की तरफ सम्मान के साथ देखा और सोचा कि वह टायरों की हालत जानते हैं फिर भी खतरा मोल ले रहे हैं।

वह अपनी जान हथेली पर लेकर इस बस से सफर कर रहे हैं, ये तो हद ही हो गई। मालिक भी ऐसी खसता बस में सफर करके मरने के लिए तैयार है यह तो हैरानी की बात है। लेखक उसके बारे में कुछ श्रद्धाभाव से उसकी ओर देखते है और ऐसा सोचते हैं। अब लेखक हिस्सेदार के बारे में सोच रहे हैं कि ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो ऐसी खसता हालत में भी बस चलाते है और खुद भी उसमें सफर करते है। वे सोचते हैं कि इसे तो कंपनी का मालिक नहीं बल्कि क्रांतिकारी आंदोलन का नेता होना

© JCERT not to be republished

चाहिए था। क्योंकि ऐसे व्यक्तियों को जिन्हें अपना आत्म बलिदान देने का साहस हो, कहीं का नेता होना चाहिए ताकि वह किसी अच्छे आंदोलन का नेतृत्व कर सके। लेखक अब तरह–तरह के भय से घिरे हुए है सोचते हैं कि अगर वे सब मर जाते तो देवता बाँहें फैलाए उनका इंतजार करते। लेखक उसके बारे में सोचते हैं और कहते हैं कि अगर यह बस यात्रा करते हुए मर गया या फिर सब मर जाते तो ईश्वर हमारे लिए ही बाँहें पसारे बैठे हमारा इंतजार करते। ईश्वर कहते कि कितना महान आदमी है। एक टायर बदलने की बजाए अपने प्राण दे दिए, यह बहादुरी का काम है। कंडक्टर साहब ने अपना सहयोग दिया और टायर बदला फिर बस चल पड़ी। लेखक को जरा सा भी विश्वास नहीं था कि वे, अपनी मंजिल पर पहुँच पाँऐंगे उन्होंने उम्मीद ही छोड़ दी थी। ऐसा लग रहा था कि पूरी जिन्दगी इस बस में ही गुजारनी पड़ेगी और इससे मृत्यु लोक को प्रस्थान कर चले जाना होगा। सारी जिन्दगी इसी बस में गुजर जानी है। प्राण भी शायद इसी बस के द्वारा ही निकल जाए, ऐसा संभव था। अब लेखक को ऐसा लगने लगा था कि इस धरती पर उसकी कोई मंजिल नहीं है। आखिरी मंजिल यह बस थी पता नहीं ये कहाँ ले जाएगी। बेचौनी, मन में तरह तरह के ख्याल, तरह–तरह की चिंताएें अब खत्म हो गई। अब भरोसा ही नहीं था, बस ने तो मंजिल तक पहुँचना ही नहीं है अतः शोर मचाने से कुछ नहीं होगा। अराम से इत्मीमान से बैठ गए। जितने भी यात्री थे सब आपस में हँसी – मजाक करने लगे। और लेखक के जो मित्र थे वह भी अब अपना समय हँसी–मजाक में बिताने लगे।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

3. लेखक को बस पर भरोसा क्यों नहीं रहा?

4. लेखक को हर पेड़ दुश्मन क्यों लग रहा था?

5. लेखक ने कम्पनी के हिस्सेदार की और श्रद्धाभाव से क्यों देखा?

6. 'उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है' लेखक ने ऐसा क्यों कहा?

बहुवैकल्पिक प्रश्न

7. 'बस की यात्रा' पाठ के रचनाकार कौन हैं?

   क. जयशंकर प्रसाद

   ख. आचार्य रामचंद्र शुक्ल

   ग. प्रेमचंद

   घ. हरिशंकर परसाई

© JCERT not to be republished

8. 'बस की यात्रा' किस विधा में लिखी गई है?

क. कहानी

ख. यात्रा–वृत्तान्त

ग. हास्य व्यंग्य

घ. पत्र

9. लेखक हर पेड़ को अपना दुश्मन क्यों समझ रहे थे?

क. उनको डर था कि कोई पेड़ उनपर न गिर पड़े

ख. लेखक को पेड़ अच्छे नहीं लगते थे

ग. लेखक बचपन में पेड़ से गिर गए थे

घ. बस किसी भी पेड़ से टकरा सकती थी

10. लेखक एवं उनके साथियों को कहाँ की बस पकड़नी थी?

क. सतना की

ख. ग्वालियर की

ग. भोपाल की

घ. जबलपुर की

11. चलते–चलते एकाएक बस रुक क्यों गई?

क. उसका इंजन खराब हो गया था

ख. आगे रास्ता खराब था

ग. डाकुओं ने बस को रुकवा लिया था

घ. पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया था

© JCERT not to be republished

12. क्षीण चाँदनी में वृक्षों की छाया में बस कैसी लग रही थी?

क. चतुर

ख. दयनीय

ग. सुंदरी

घ. युवती

13. बस की सीट का किससे असहयोग चल रहा था?

क. सड़क से

ख. इंजन से

ग. बस की बॉडी से

घ. ड्राइवर से

14. लेखक बस कंपनी के हिस्सेदार से क्या उम्मीद कर रहा था?

क. वह दूसरी बस मांगवाएगा

ख. वह आज यहीं रहने के लिए कहेगा

ग. वह इंजन को निकालकर गोद में रख लेगा

घ. वह स्वयं बस चलाएगा

15. प्रकृति के दृश्य कैसे थे?

क. कष्टदायक

ख. लुभावने

ग. चमकीले

घ. डरावने

© JCERT not to be republished

16. झील को देखकर लेखक को क्या लगता था?

क. इसमें नहाना चाहिए

ख. बस झील में ही न गिर जाए

ग. झील बहुत पुरानी है

घ. झील का पानी पीने लायक है या नहीं

17. बस मालिक को किसी क्रांतिकारी आंदोलन का हिस्सा क्यों होना चाहिए था?

क. वह बहुत बड़े देशभक्त थे

ख. उनमें नेतृत्व की भावना थी

ग. उनमें उत्सर्ग की भावना थी

घ. वे एक अच्छे सामाजिक कार्यकर्ता थे

18. 'मर गया पर टायर नहीं बदला' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

क. बस वाला बहुत बहादुर था

ख. वह बहुत बड़ा आदर्शवादी था

ग. वह पक्का व्यापारी था

घ. वह बहुत बड़ा कंजूस था

19. देवता बाँह पसारे बस वाले का इंतजार क्यों करते थे?

क. क्योंकि वह महान व्यक्ति था

ख. उसने एक टायर के लिए अपना बलिदान दे दिया

ग. वह बहुत परोपकारी था

घ. वह बहुत दानवीर था

© JCERT not to be republished

20. इस पाठ में गाँधी जी के किस आंदोलन का उल्लेख किया गया है?

क. असहयोग आंदोलन

ख. सविनय अवज्ञा आंदोलन

ग. दांडी यात्रा

घ. सत्याग्रह

21. लेखक ने क्या कहकर बस पर व्यंग्य किया है?

क. यह बस वयोवृद्ध है

ख. यह बस पूजनीय है

ग. यह बस श्रद्धा के योग्य है

घ. उपर्युक्त सभी

पाठ्यपुस्तक से प्रश्नोत्तर

प्रश्न. 1. : लेखक ने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ श्रद्धाभाव से क्यों देखा?

उत्तर : पुलिया के ऊपर बस का टायर पंचर हो गया। जिससे बस जोर से हिलकर रुक गई। अगर यह बस तेज गति से चल रही होती तो अवश्य ही उछलकर नाले में गिर जाती। ऐसे में लेखक ने कंपनी के हिस्सेदार की ओर श्रद्धाभाव से देखा। यह श्रद्धा इसलिए जागी क्योंकि हिस्सेदार केवल अपने स्वार्थ हेतु लाचार था। वह जानता था कि बस के टायर खराब है और कभी भी लोगों की जान खतरे में पड़ सकती है। फिर भी निरंतर बस को सड़क पर दौड़ा रहा था। यात्रियों की चिंता किए बिना धन बटोरने पर लगा था।

प्रश्न. 2. : लेखक को लोगों ने शाम वाली बस से सफर न करने की सलाह क्यों दी?

उत्तर : लेखक को लोगों ने शाम वाली बस से सफर न करने की सलाह इसलिए दी क्योंकि– लोगों को बस की सच्चाई का पता था। अर्थात वे उसकी जर्जर दशा से परिचित थे। बस कब, कहाँ खराब हो जाए कुछ कहना मुश्किल था। बस यात्री को गंतव्य तक ठीक से पहुँचा ही देगी, यह कहना मुश्किल था।

© JCERT not to be republished

प्रश्न 3. : लेखक को ऐसा क्यों लगा कि सारी बस ही इंजन है और वह इंजन के भीतर बैठा है?

उत्तर : असल में वह बस इतनी हिलती काँपती थी जैसे इंजन स्टार्ट करने के बाद बेहद कम्पन करता है, उसी प्रकार बस भी कांपती थी। इसलिए लेखक को लगा कि सारी बस इंजन ही इंजन हो गई हो और वह बस में न बैठकर इंजन में ही बैठ गया हो।

प्रश्न. 4. : लेखक को तब हैरानी क्यों हुई जब कंपनी के हिस्सेदार ने बताया कि बस अभी अपने आप चलेगी?

उत्तर : लेखक के अनुसार वह बस इतनी पुरानी थी कि धक्का मारने के बाद ही चल सकती थी। जब कंपनी के हिस्सेदार ने कहा कि बस अपने आप चलती है। आप अभी देख लें, तब लेखक को आश्चर्य हुआ।

प्रश्न. 5. : लेखक हर पेड़ को अपना दुश्मन क्यों समझ रहा था?

उत्तर : जर्जर बस होने के कारण लेखक को लगता था कि कहीं बस की स्टीयरिंग फेल न हो जाए जिससे किसी पेड़ से टकरा जाए। यदि पेड़ से बस टकरा गई तो मौत निश्चित ही आ जाएगी। इसलिए सड़क के किनारे–किनारे खड़े पेड़ उसे दुश्मन जैसे लग रहे थे।

प्रश्न. 6. : लेखक को किसे देखकर श्रद्धा उमड़ पड़ी और क्यों?

उत्तर : लेखक को बस को देखकर श्रद्धा उमड़ पड़ी। जब लेखक ने बस की दशा देखि तो उस वयोवृद्ध पुरानी बस के प्रति श्रद्धा उमड़ पड़ी। क्योंकि बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है।

प्रश्न. 7. : सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंग्यकार ने किस रूप में किया है? लिखें।

उत्तर : सविनय अवज्ञा का उपयोग व्यंग्यकार लेखक ने बस की जीर्ण–शीर्ण दशा तथा उसके किसे प्रकार चलते जाने के संदर्भ में किया है। लेखक व्यंग्य रूप में बताना चाहता है कि बस की दशा अत्यंत खराब है।वह चलने की दशा में नहीं है, फिर भी कभी धीरे–धीरे, कभी रुक–रुक कर चलती रहती है। ऐसा लगता है कि ड्राइवर तथा यात्रियों के खिलाफ यह रूककर, खराब होकर अवज्ञा प्रकट कर रही है।

प्रश्न. 8. : प्रकृति के दृश्य भी लेखक को लुभावने क्यों नहीं लग रहे थे ?

उत्तर : सड़क के दोनों और सुन्दर वृक्ष थे जिन पर पक्षी बैठे थे। लेकिन लेखक को तो हर पेड़ दुश्मन नजर आ रहा था। क्योंकि हर पेड़ के आने पर उसे ऐसा प्रतीत होता कि बस कहीं इससे टकरा न जाए। इसीलिए उसे लुभावने प्रकृति के दृश्य भी आकर्षित करते थे।

© JCERT not to be republished

भाषा—संदर्भ

प्रश्न. 1. : बस, वश, बस, तीन शब्द हैं— इनमें बस सवारी के अर्थ में, वश अधीनता के अर्थ में और बस पर्याप्त (काफी) के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जैसे—

शाम वाली बस से चलना होगा। (सवारी के अर्थ में)

यह काम मेरे वश का नहीं है। (अधीनता के अर्थ में)

बस रहने दो। (पर्याप्त होने के अर्थ में)

उपर्युक्त वाक्यों के सामान ही 'बस', वश और 'बस' से दो—दो वाक्य बनाइए।

उत्तर—

शब्द	अर्थ	वाक्य
बस	सवारी के अर्थ में	(1). यह बस बोकारो से राँची जाती है।
		(2). हम सुबह स्कूल बस से पिकनिक जा रहे हैं।
वश	अधीनता के अर्थ में	(1). माफ करें, यह काम मेरे वश में नहीं है।
		(2). काश! मेरे वश में होता तो मैं ये कायदे—कानून बदल देता
बस	पर्याप्त के अर्थ में	(1). बस रहने दो, और कितनी पूड़ियाँ खिलाओगे?
		(2). अब बस करो, मैं और नहीं सुन सकती।

प्रश्न. 1. : "हम पाँच मित्रों ने तय किया कि शाम चार बजे की बस से चलें। पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है।"

उत्तर : ऊपर दिए गए वाक्यों में ने, को, से आदि वाक्य के दो शब्दों के बीच संबंध स्थापित कर रहे हैं। ऐसे शब्दों को कारक कहते हैं।

इसी प्रकार, दो वाक्यों को जोड़ने के लिए 'कि' का प्रयोग होता है। जैसे— कभी लगता है कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागे जा रही है।

© JCERT not to be republished

इस पाठ में से दोनों प्रकार के चार वाक्यों को चुनिए।

1. पन्ना से इसी कंपनी की बस सतना के लिए घंटे भर बाद मिलती है।

2. वह बस पूजा के योग्य थी।

3. बस कंपनी के एक हिस्सेदार भी उसी बस में जा रहे थे।

4. नई नवेली बसों से ज्यादा विश्वसनीय है।

'कि' योजक शब्द से बनने वाले वाक्य –

1. लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस बस से सफर नहीं करते।

2. हमें लग रहा था कि हमारी सीट के नीचे इंजन है।

3. कभी लगता कि सीट को छोड़कर बॉडी आगे भागे जा रही है।

4. मालूम हुआ कि पेट्रोल की टंकी में छेद हुआ है।

प्र. 3. ''हम फौरन खिड़की से दूर सरक गए। चाँदनी में रास्ता टटोलकर वह रेंग रही थी।''

दिए गए वाक्यों में 'सरकना' और 'रेंगना' जैसी क्रियाएँ दो प्रकार की गतियाँ दर्शाती है। ऐसी कुछ और क्रियाएँ एकत्र कीजिए जो गति के लिए प्रयुक्त होती हैं जैसे–घूमना। एकत्रित क्रियाओं का वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

उत्तर – गति के लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द–

दौड़ना – मुझे तेज दौड़ना अच्छा लगता है।

चलना – बुढ़ापे के कारन बुढ़िया का चलना मुश्किल था।

टहलना – हमें रोज हरी घास पर टहलना चाहिए।

© JCERT not to be republished

प्र. 4. "काँच बहुत कम बचे थे। उनसे हमें बचना था।''

इस वाक्य में 'बच' शब्द को दो तरह से प्रयोग किया गया है। एक 'शेष' के अर्थ में और दूसरा 'सुरक्षा' के अर्थ में। नीचे दिए गए शब्दों को वाक्यों में प्रयोग करके देखिए। ध्यान रहे, एक ही शब्द वाक्य में दो बार आना चाहिए और शब्दों के अर्थ में कुछ बदलाव होना चाहिए।

(क) जल (ख) हार

उत्तर – एक ही शब्द के दो अर्थ बताने वाले वाक्य–

(क). जल (पानी, जलना) – **जल** की बूँद न गिरने से धरती **जल** रही है।

(ख) हार (पराजय, फूलों का हार) – याद रखना **हार** जाने पर **हार** नहीं पहनाए जाते।

प्र. 5. : बोलचाल में प्रचलित अंग्रेजी शब्द 'फर्स्ट क्लास' में दो शब्द हैं – फर्स्ट और क्लास। यहाँ क्लास का विशेषण है फर्स्ट। चूंकि फर्स्ट क्लास संख्यावाचक विशेषण का उदाहरण है। 'महान आदमी' में किसी आदमी की विशेषता है महान। यह गुणवाचक विशेषण है। संख्यावाचक विशेषण और गुणवाचक विशेषण के दो–दो उदाहरण खोज कर लिखिए।

उत्तर – संख्यावाचक विशेषण –

1. जिसने **एक** टायर के लिए प्राण दे दिए।

2. बस की रफ्तार अब **पंद्रह–बीस** मील हो गई थी।

गुणवाचक विशेषण –

1. खूब **वयोवृद्ध** थी।

2. यह बस **पूजा योग्य** थी।

गद्यांश के प्रश्नोत्तर

उत्तर 1. : बस पर चढाने आए लोग लेखक और उसके मित्रों को इस प्रकार देख रहे थे कि जैसे अंतिम विदाई दे रहे हों। क्योंकि वे जानते थे कि इस बस का कोई भरोसा नहीं है।

© JCERT not to be republished

उत्तर 2. : "आया है सो जाएगा – राजा, रंक, फकीर''– इस पंक्ति का आशय है कि जिस भी व्यक्ति ने इस धरती पर जन्म लिया है उसे एक–न–एक दिन तो मृत्यु को वरण करना ही है चाहे वह राजा हो, भिखारी हो या साधू हो।

उत्तर 3. : बस में बैठने के बाद लेखक को यह मालूम हो गया कि इस बस में बैठना खतरे से खाली नहीं है इसलिए उसे बस पर भरोसा न रहा। उसे लगने लगा कि इस बस का कभी भी ब्रेक फेल हो सकता है या स्टीयरिंग टूट सकता है।

उत्तर 4. : जैसे ही बस किसी पेड़ के सामने से गुजरती तो लेखक को लगने लगता कि बस उससे टकरा जाएगी और वह पेड़ उसे अपना दुश्मन लगने लगता।

उत्तर 5. : लेखक ने कंपनी के हिस्सेदार को श्रद्धाभाव से इसलिए देखा क्योंकि यह जानते हुए भी कि बस के पहिए खराब हैं, लोगों की जान खतरे में पड़ सकती है, वे निरंतर अपने लोभ–लालच के कारण बस को सड़क पर भगा रहे है।

उत्तर 6. : 'उत्सर्ग की ऐसी भावना दुर्लभ है' बस के कंपनी के हिस्सेदारी के लिए लेखक ने यह कहा है, कंपनी के हिस्सेदारों का बस के प्रति ऐसा लगाव व उसे न छोड़ने का मोह बहुत ही कठिनाई से देखने को मिलता है। इसमें भी कम्पनी के हिस्सेदार बस की जर्जर अवस्था होने के बावजूद भी उसे छोड़ने को तैयार न थे।

बहुवैकल्पिक प्रश्नों के उत्तर

7. घ. हरिशंकर परसाई

8. ग. हास्य व्यंग्य

9. घ. बस किसी भी पेड़ से टकरा सकती थी

10. क. सतना की

11. घ. पेट्रोल की टंकी में छेद हो गया था

12. ख. दयनीय

13. ग. बस की बॉडी से

© JCERT not to be republished

14. ग. वह इंजन को निकालकर गोद में रख लेगा

15. ख. लुभावने

16. ख. बस झील में ही न गिर जाए

17. ग. उनमें उत्सर्ग की भावना थी

18. घ. वह बहुत बड़ा कंजूस था

19. क. क्योंकि वह महान व्यक्ति था

20. क. असहयोग आंदोलन

21. घ. उपर्युक्त सभी

© JCERT not to be republished